"अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर रिपोर्ट"

(21 फ़रवरी 2026)

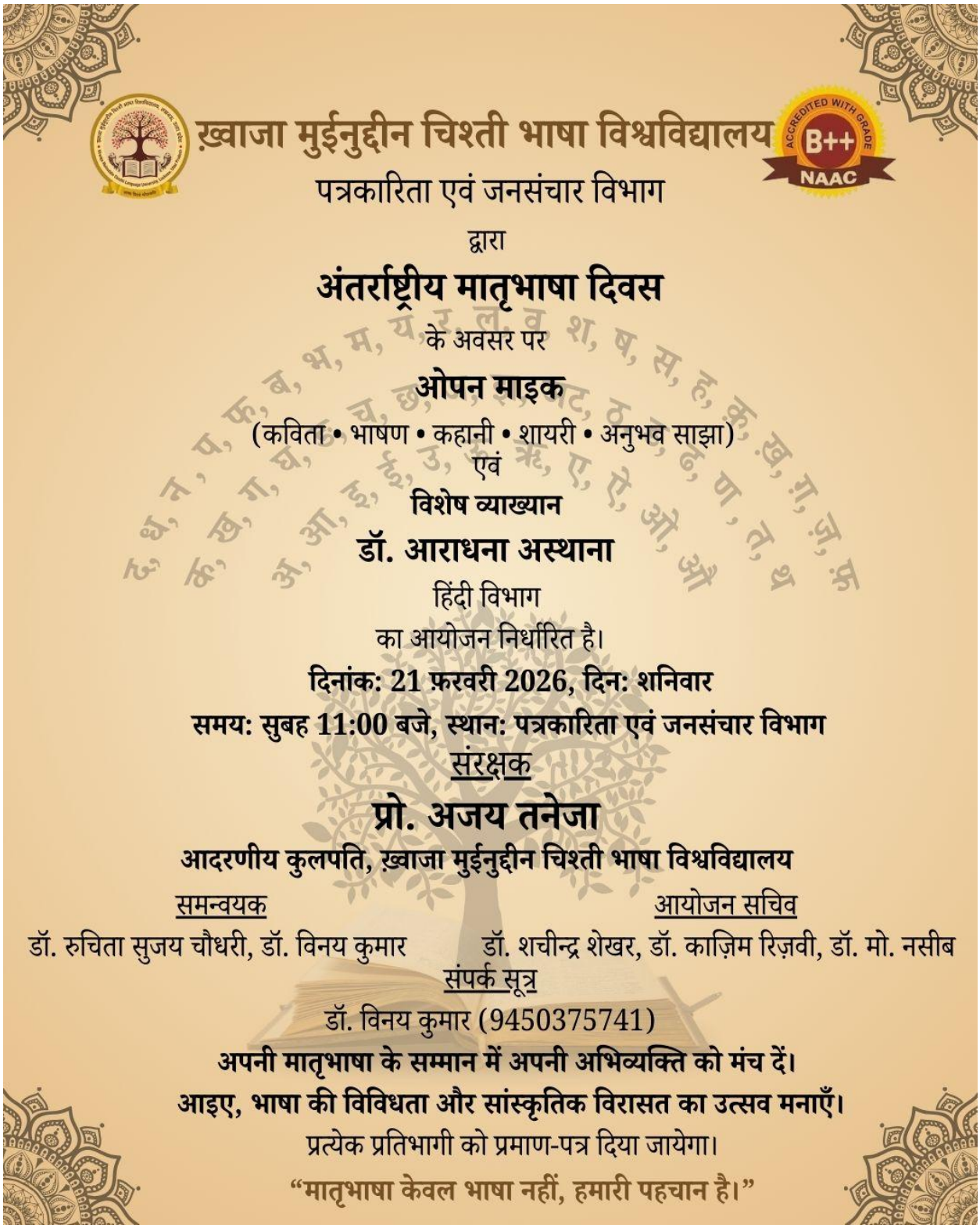

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण मुख्य वक्ता डॉ. आराधना अस्थाना का प्रेरणादायी उद्बोधन रहा, जिसमें उन्होंने मातृभाषा के महत्व और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

अपने संबोधन में डॉ. आराधना अस्थाना ने कहा कि मातृभाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान की मूल आधारशिला है। उन्होंने स्पष्ट किया कि व्यक्ति अपने विचारों और भावनाओं को सबसे प्रभावी ढंग से अपनी मातृभाषा में ही अभिव्यक्त कर सकता है। उन्होंने आगे कहा कि मातृभाषा के संरक्षण और संवर्धन से न केवल सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रहती है, बल्कि समाज में वैचारिक समृद्धि भी सुनिश्चित होती है।

डॉ. अस्थाना ने विशेष रूप से पत्रकारिता के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मीडिया की जिम्मेदारी है कि वह मातृभाषाओं को प्रोत्साहित करे और स्थानीय भाषाई विविधता को सशक्त मंच प्रदान करे। उन्होंने कहा कि मातृभाषा में पत्रकारिता करने से समाज के अंतिम व्यक्ति तक प्रभावी संवाद स्थापित किया जा सकता है। इसी बीच विद्यार्थियों को यह भी प्रेरित किया गया कि वे अपने लेखन और रिपोर्टिंग में स्थानीय भाषाई संदर्भों को स्थान दें।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्राध्यापकगण डॉ. नसीब, डॉ. काजिम रिजवी तथा डॉ. विनय कुमार विशेष रूप से उपस्थित रहे। इसके बाद ओपन माइक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें परास्नातक छात्र सलमान अंसारी ने मातृभाषा के संरक्षण में युवाओं की भूमिका पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उनके वक्तव्य की सभी ने सराहना की। गोष्ठी का उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच मातृभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा भाषाई विविधता के संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना था। अंततः कार्यक्रम संवाद, सहभागिता और विचार-विमर्श के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।